Vol 7 Issue 3 Dec 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017

''रांगेय राघव के आंचलिक उपन्यासों में प्रकृति की गोद में बसे पिछडे समाज का चित्रण''

डॉ. सुरेशकुमार केसवानी
एम.ए., बी.एड., एम.फिल., पी.एच.डी.
अधिव्याख्याता व विभागाध्यक्ष(हिन्दी) सीताबाई कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, अकोला.

प्रस्तावना :

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार रांगेय राघव स्वातंत्र्योत्तरकाल के उपन्यासकार रहे हैं। पूँजीवाद, शोषण एवं बुर्जुआ मनोवृत्ति का तीव्र विरोध उनमें व्याप्त है। वर्ग विषमता, सामाजिक विकृतियाँ, मानवीय कुरूपता और अत्याचारों पर उन्होंने कटु व्यंग किये हैं। उन्होंने मानव और उसके यथार्थ को देखा है तथा तदनुकूल चित्रण भी किया है। इनके बहुत से उपन्यास हैं, जिनमें आँचलिक भी हैं। जैसे 'कब तक पुकारूँ', 'काका', 'धरती मेरा घर', 'उबाल', 'राई और पर्वत', 'पथ का पाप' आदि।

रांगेय राघव के आँचलिक उपन्यास

स्वतंत्र विधा के रूप में आँचलिक उपन्यास का अस्तित्व हिन्दी साहित्य जगत में रहा है अतः उसकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 'कब तक पुकारूँ', 'धरती मेरा घर' और 'राई और पर्वत' का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

रांगेय राघव ने आँचलिक दृष्टि से 'अँचल' विशेष का चित्रण वस्तु-अनुरूप, जाति विशेष का परिस्थितिगत भी चित्रण किया है।

'कब तक पुकारूँ' :-

इसमें सुखपाल सुखराम में परिवर्तित हुआ है। अधूरा किला केइर्दगिर्द घूमती कथा में जासूसी तथा तिलस्मी सा चमत्कार खड़ा कर लेखक की पुकार के रूप में सुखराम का जीव प्रकट होता है।

'धरती मेरा घर' :-

इसमें लोहपीटे जगह-जगह घूमते हैं, उनका जीवन संघर्षमय बन जाता है, उसका चित्रण कर पाठक को वास्तविकता का दर्शन कराकर जाति-विशेष के प्रति सहानुभूति जगाई है।

'राई और पर्वत' :-

इसमें विषयवस्तु विशेष ढंग से प्रस्तुत की है। दो स्त्रियों के भिन्न-भिन्न रूप दिखाकर रांगेय राघव ने यह बताया है कि सच क्या है और झूठ क्या है।

इस प्रकार गाँव के अँचल के कण-कण से उपन्यासकार के परिचित हो जाने से लोगों की मनोदशा, उनकी स्वभावगत वृत्तियाँ, उनका चरित्र आदि का चित्रण

किया है।

प्रकृति–चित्रण तथा प्रकृत्ति की गोद में बसे पिछडे समाज का चित्रण :–

आँचलिक उपन्यासों में प्रकृति को केन्द्र में रखा जाता है ये कृतियॉ प्रकृत्ति–सौंदर्य प्रकट करती है। 'कब तक पुकारूँ' में प्रकृत्ति की गोद में बसे पिछड़े समाज का चित्रण करने के लिए प्रकृति का वर्णन स्थान–स्थान पर किया है, जैसे –

वहाँ(गाँव में) एक नीरवता छाई रहती और दिन में कभी–कभी गाय और भैंसे वहॉ पेडों की छाया में बैठकर जुगाली करती है। सब अपने–अपने धन्धों में लगे रहते। दूर तक यहाँझील झाई मारती हवा के थपेड़ो में ऐसी लहर मारती कि जैसे कोई झीनी चादर सरकती चली जा रही हो और सब वह उठ जाएगी, पर ऐसा नही होता। १ प्रकृती का यह परिवेश ग्रामीण अँचल का यथार्थ चित्रण अंकित करता है। तथा केवल इस झील आज कुछ कह रही है। हवा का तर झोंका उसका संदेसा ला रहा है। कुत्तों और सियारों की कर्कश आवाजें मेरे कानों में उतर रही हैं, जैसे रात की अंधियारी पुकार रही है।[२] इस प्रकार प्रकृत्ति का यथार्थ चित्रित हुआ है।

'राई और पर्वत' में भी – ''रात हो आई। अँधेरा आ गया, वही पुराना। एक स्याह, जिसे कोई छू नहीं सकता। जिसे कोई देखना चाहे तो लालटेन जलानी पड़ती है, वरना न खुद दीखता है न किसी को देखने देता है। आया और सब में समा गया। .... आकाश के बादल इधर उधर सरक कर हवा में रस्साकशी करते हुए लगते है।[३] प्रातः काल का मनोहारी वर्णन लेखक की प्रकृति पर समर्पित दृष्टि का बोध कराती है, जैसे : ''सुबह की हल्की हल्की उजियाली अब गगन की काली चादर हट जाने पर भीतर से कुछ काली और कुछ नारंगी सी निकल आई थी। फर–फर करके उड़ते तोतों ने आकाश में देर लगाई और मरघट में बैठा गिध्द चौकन्ना होकर आकाश में उड़ने के लिये अपने खुरदरे काले पंख बैठे बैठे तोलने लगा। ...... गायों के गले में बंधी घंटियाँ बजने लगी और वे नीले और हरे से टीले, जो पहाड कहलाते थे, उनकी ओर चल दी।[४] तथा 'धरती मेरा घर' में '' साँझ हो चली थी। अब आकाश का यात्री अपने सुनहले डैने जैसे समेटने लग गया था। नीलम की सी धुंध उसके पांवों से छट रही थी। दूर सूरज की किरणे पेड़ों के नीचे बैठी थी, वह अब पत्तों की तहों में जा छिपी थी। कदंब के घने पेड दूर से श्यामल से दिख रहे थे। .... नीम और कदंब के पेड़ों के पास से धूल उड़ाती चली गईं।[५]

रांगेय राघव ने उपन्यासों के प्रकृति–चित्रण में छायावादी कवियों की याद दिला दी, प्रकृत्ति का मानवीकरण–रूप प्रस्तुत कर संध्या, सांझ, सुबह, भोर तथा दिन का चित्रण करते हुए उस समय की पुश–पक्षियों की प्रतिक्रिया का भी चित्रण करने के साथ–साथ प्रकृत्ति के रंगों का सजीव चित्रण किया है। इसी प्रकार प्रकृत्ति के सौंदर्य का वर्णन करने के साथ–साथ प्रकृत्ति की गोद में बसे पिछड़े समाज का चित्रण अँचल में एक ग्राम या नगर या आदिम जीवन का ग्राम–समूह वन–प्रान्त विशेष भी हो सकता है। इसमें स्थानीय परिवेश और लोकतत्व की सजीवता आवश्यक है, आँचलिक साहित्य देश की मिट्टी फोडकर उपजा है।

रांगेय राघव के उपन्यासों में ऐसे मानव चरित्रों का चित्रण हुआ है, जो सरल एवं पीड़ित हैं, उनके इन तीनों उपन्यास के पात्र राजस्थानी हैं जो आदिवासी लोगों की व्यावहारिकता के लिए आवश्कयता की पूर्ति हेतु किया – प्रतिक्रिया संबंध में प्रकट होती है, जो कभी मानवीय रिश्तों से कभी नौकर मालिक के रूप में या कभी पारिवारिक संबंधों में प्रकट होते हैं, तब उनकी सरलता एवं पीड़ित मनोदशा का चित्रण होता है।

रांगेय राघव ने अपने उपन्यासों में पात्रों की यथार्थ स्थिति का निरूपण किया है यह अभिव्यक्ति कभी इतनी सहज और स्वाभाविक लगती है कि सहज ही लोक–जीवन का सच्चा रूप प्रगट हो जाता है। 'कब तक पुकारूँ' का वर्णन '' आग तेज कर दे परमेसुरी। सोने दोगी कि यहाँ से हट जाउँ? ..... एक से ही भर पाया था, अब तो दो हो गई।[६] जिस जाति में नागरिक चरित्र की कल्पना मुश्किल उस जाति का करनट सुखराम नई दिशा की और कदम उठा रहा था, ऐसे समाज के सम्बन्ध में रांगेय राघव ने लिखा हैः ''खडगसिंह जैसे डाकू–ये सब इन्सान हैं? इनमें इंसानियत नहीं है, ये पर–पीड़क हैं, और आत्मग्रस्त हैं, ये सिर्फ दूसरों का खून पीते हैं। इनके खिलाफ कितना लिखा गया है, कितना कहा गया है पर इस मुल्क में वे बरकरार हैं। इनके अत्याचार के नैरंतर्य से दुःखी और विवश लेखक केवल पुकार सकता है, सो पुकार रहा है, मगर प्रश्न तो यह है कि, कब तक पुकारे? कब तक भोले लोगों के व्यक्तित्वों और भावनाओं का अपमान बर्दाश्त करता है? कब तक पोथियों पर पोथियाँ लिख पढकर अपना स्वास्थ्य खराब करता हे, आखिर कब तक?[७]

'राई और पर्वत' में नारी जीवन की संघर्ष स्थित में तो सरकार ? मैं तो बाहर बैठा हूँ, और जिसने पत रखा है, वह हवालात में बन्द है? तू जानती है पूरे सौ के पत्ते में आग लगाई है मैंने तेरे पीछे, तब तो आ पाया हूँ यहाँ। [८]

अतः समाज में लीक से हटनेवाले के लिए कोई कोई आधुनिक व्यवस्था नहीं बल्कि आदिम व्यवस्था है। संक्षेप में समाज के अच्छे और बुरे स्वरूप के लिए स्वयं मानव जिम्मेदार है, मानव ही तो समाज की इकाई है। इसमें विद्या तथा उनके पिता की सरलता तथा विद्या की मां की बाह्य शिष्टता, हरदेव की आंतरिक पीड़ा और रामभरोसे का विधवा को पाने का संघर्ष चित्रित हुआ है। इन सारी प्रकृत्तियों से उन पात्रों की प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है।

'धरती मेरा घर' में लेखक ने प्रोफेसर शर्मा साहब से चिंतन प्रकट किया है कि ' ये लोग चलते हैं, फिर भी नहीं बदलते। गाँव में लोग टिक कर रहते हैं, पर बहुत धरी बदलते हैं। [९] इस प्रकार तुलना की है। इस उपन्यास में प्रत्येक पात्र की अपनी निजी व्यथा रही है, जैसे, मैं मर जाउँगा मास्टर साहब।..... वह बोला ।', 'मैंने कहा सब मर गए मंगल। यह बच्चा अपना नहीं। ...... यही अपना है, अब मंगल .... मैंने कहा यह कैसे हो सकता है मास्टर साब। मर जाना अच्छा है। .... इस पाप से तू बच जायेगा।[१०] इस प्रकार यहाँ मंगल तथा मास्टर साहब की मनोव्यथा प्रकट हुई हैं। कृष्णप्रसाद का सरल स्वभाव, ''मास्टर साहब, एक ही समय में इस धरती पर कितने लोग रहते हैं और सब ही अपनी मान्यताओं को ईश्वरीय समझते हैं। इन लोहपिटों को आपने इस योग्य नहीं समझा कि इनसे बातें भी की जाए ? हम लोग जो सवर्ण हैं, क्या हमारे रक्त में कुछ विशेषता है ? और फिर लोहपिटे नीच नहीं, मैंने मोती से पूछा। [११] यहाँ कृष्ण की सरलता यही प्रकट करती है कि मनुष्य - मनुष्य है चाहे लोहपिटा हो या ठाकुर।

रांगेय राघव ने प्रस्तुत उपन्यास में प्रगति के पथ पर चलने वाला समाज घोर पीड़ा से ग्रस्त है, जो अपने निजी स्वार्थ को छोड भी देते हैं, और कभी-कभी मनुष्य को, गरीब को बचाने में तथा खुद की नौकरी बचाने में लोहपीटे की जिंदगी दाँव पर लग जाती है। मोती का स्वप्न लाली की ममता और चन्दा के प्यार पर बलि चढ़ जाता है। तीनों उपन्यासों में सरल तथा पीड़ित पात्रों का चित्रण कर रांगेय राघव ने मानव मन की व्यथा को प्रकट किया है।

निष्कर्ष :-

आँचलिक वातावरण में प्रस्तुत क्षेत्र की केवल भौगोलिक अवस्थित और प्राकृतिक बनावट ही नहीं आती, वरन स्थानीय गति-विधियों, रहन-सहन, सांस्कृतिक धारा, परम्परागत जीवन विधान, बातचीत, प्रचलित उक्तियों, कलात्मक अभिरूचियों को लिए है। संस्कृति मनुष्यों का वह विशिष्ट गुण है जो उन्हें दूसरे प्राणियों से अलग करता है, जैसे कौटुम्बिक सम्बन्ध, वस्तुओं में संस्कृति व्दारा संस्कारिता व्यक्तियों के पारम्पारिक संबंधों का तानाबाना संस्कृति का निर्माण करता है। [१२] रांगेय राघव के इन आँचलिक उपन्यासों में कई तत्वों को देखा जा सकता है। उनमें आँचलिक उपन्यास की विषयगत विशिष्टता के अनुसार संस्कृति का चित्रण हुआ है।

VOLUME - 7 | ISSUE - 3 |DECEMBER - 2017

संदर्भ सूची :—

क्रम	संदर्भ	पृष्ठ
1	कब तक पुकारूँ— रांगेय राघव	07
2	कब तक पुकारूँ— रांगेय राघव	35
3	राई और पर्वत — रांगेय राघव	39
4	राई और पर्वत — रांगेय राघव	17
5	धरती मेरा घर — रांगेय राघव	08
6	कब तक पुकारूँ— रांगेय राघव	360
7	कब तक पुकारूँ— रांगेय राघव	27
8	राई और पर्वत — रांगेय राघव	37—71
9	धरती मेरा घर — रांगेय राघव	14
10	धरती मेरा घर — रांगेय राघव	33—35
11	धरती मेरा घर — रांगेय राघव	15
12	रांगेय राघव का रचना संसार — गोविन्द रजनीष	94

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com